

न्यूज टुडे

केंद्र सरकार "राष्ट्रीय वन हेल्थ मिशन" शुरू करेगी

इस मिशन को प्रधान मंत्री की विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार सलाहकार परिषद (PM-STIAC) ने अनुमोदित किया है। इसके तहत स्वास्थ्य संबंधी जोखिमों की परस्पर जुड़ी प्रकृति को पहचानते हुए महामारी के खिलाफ मजबूत तैयारी और एकीकृत रोग नियंत्रण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

‘राष्ट्रीय वन हेल्थ मिशन’ के बारे में

- विज्ञान: बेहतर स्वास्थ्य परिणाम, बेहतर उत्पादकता और जैव विविधता के संरक्षण के लिए मानव, पशु एवं पर्यावरण को एक साथ लाकर भारत में एकीकृत रोग नियंत्रण तथा महामारी के खिलाफ तैयारी तंत्र का निर्माण करना।
- कार्यान्वयन एजेंसी: भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR)।
- एंकर संस्थान: राष्ट्रीय वन हेल्थ संस्थान, नागपुर।
- महत्वपूर्ण स्तंभ:
 - अनुसंधान और विकास: टीके, निदान (diagnostics) और चिकित्साविधान (therapeutics) जैसे आवश्यक साधन विकसित करने के लिए लक्षित अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देना।
 - नैदानिक तैयारी (Clinical Readiness): नैदानिक देखभाल संबंधी अवसररचना और प्रतिक्रिया क्षमताओं के संदर्भ में तैयारी को बढ़ाना।
 - डेटा समेकन: बेहतर पहुंच एवं विश्लेषण के लिए मानव, पशु और पर्यावरण के स्वास्थ्य के मामले में डेटा व सूचना संपर्क कड़ियों को सुव्यवस्थित करना।
 - सामुदायिक सहभागिता: प्रतिक्रिया की निरंतर तैयारी की स्थिति बनाए रखने के लिए घनिष्ठ सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित करना।

‘वन हेल्थ’ के बारे में

- वन हेल्थ एक एकीकृत और समन्वित दृष्टिकोण है। इसका उद्देश्य मनुष्यों, जानवरों, पादपों और पारिस्थितिकी-तंत्र के स्वास्थ्य को सतत रूप से संतुलित एवं अनुकूलित करना है।
- भारत में ‘वन हेल्थ’ दृष्टिकोण निम्नलिखित कारणों से आवश्यक है:
 - अनूठी जनसांख्यिकी जैसे- विविध वन्यजीव, दुनिया की सबसे बड़ी पशुधन आबादी में से एक भारत में है और मानव आबादी का उच्च घनत्व;
 - हालिया रोग प्रकोप जैसे- कोविड-19 महामारी, मवेशियों में गांठदार त्वचा रोग का प्रकोप, एवियन इन्फ्लूएंजा का लगातार खतरा आदि।

‘अंतरराष्ट्रीय क्रायोस्फीयर जलवायु पहल’ ने “स्टेट ऑफ द क्रायोस्फीयर रिपोर्ट 2025” जारी की है

इस रिपोर्ट में क्रायोस्फीयर यानी हिमांक-मंडल के पांच प्रमुख घटकों में हो रहे परिवर्तनों की स्थिति और प्रभावों को उजागर किया गया है। ये पांच प्रमुख घटक हैं: बर्फ की चादरें, पर्वतीय हिमनद और हिमपात, ध्रुवीय महासागर, समुद्री बर्फ तथा स्थायी तुषार भूमि (पर्माफ्रॉस्ट)।

रिपोर्ट के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर

- बर्फ की चादरें (Ice Sheets): ग्रीनलैंड और अंटार्कटिका की बर्फ की चादरों से बर्फ का कम होना 1990 के दशक की तुलना में चार गुना बढ़ गया है।
 - प्रभाव: इससे समुद्री जल-स्तर बढ़ा है। समुद्री जल-स्तर बढ़ने से तटीय क्षेत्रों में अवसररचना, कृषि भूमि, मकानों और आजीविका को व्यापक स्तर पर नुकसान पहुंच रहा है।
- ध्रुवीय महासागर (Polar Oceans): ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ने से ऊष्मा और कार्बन अवशोषित करने की ध्रुवीय महासागरों की क्षमता कम हो रही है तथा वैश्विक महासागरीय जल-धाराओं के परिसंचरण में इनकी भूमिका प्रभावित हो रही है।
 - प्रभाव: अंटार्कटिक ओवरटर्निंग सर्कुलेशन (AOC) और अटलांटिक मेरिडियनल ओवरटर्निंग सर्कुलेशन (AMOC) जैसी दो प्रमुख महासागरीय जलधाराएं, ठोस ताजा-जल (हिमनद या बर्फ) के पिघलकर महासागर में मिलने से काफी धीमी हो गई हैं।
- पर्वतीय हिमनद और हिम (Mountain Glaciers and Snow): वर्ष 2000 से 2023 के बीच विश्व-भर में हिमनदों से प्रतिवर्ष लगभग 273 गीगाटन बर्फ पिघल गई हैं। यह हिमनदों के बर्फ की तीव्र गति से पिघलने का संकेत है।
 - प्रभाव: यह स्थिति अरबों लोगों के लिए जल, भोजन, आर्थिक और राजनीतिक सुरक्षा के लिए गंभीर संकट उत्पन्न कर रही है।
- समुद्री बर्फ (Sea Ice): 1979 से अब तक, आर्कटिक और अंटार्कटिक, दोनों ध्रुवीय क्षेत्रों में समुद्री बर्फ का विस्तार और मोटाई 40–60% तक कम हो गई है।
 - प्रभाव: समुद्री बर्फ कम होने से निम्नलिखित प्रभाव सामने आ रहे हैं:
 - आर्कटिक क्षेत्र का तापमान विश्व के अन्य क्षेत्रों की तुलना में तेजी से बढ़ रहा है,
 - बर्फ पर निर्भर प्रजातियों के लिए खतरा उत्पन्न हो गया है,
 - मौसम और महासागरीय जल-धाराओं में परिवर्तन हो रहे हैं, तथा
 - समुद्री जल-स्तर में वृद्धि से जुड़े खतरे बढ़ रहे हैं।
- स्थायी तुषार भूमि (Permafrost): वर्तमान तापवृद्धि की शुरुआत से प्रत्येक दशक में लगभग 2,10,000 वर्ग किलोमीटर पर्माफ्रॉस्ट पिघल चुका है।
 - प्रभाव: पर्माफ्रॉस्ट के पिघलने से इनमें वर्षों से जमा जैविक कार्बन का वायुमंडल में उत्सर्जन हो रहा है जिससे इनकी माला बढ़ रही है। इससे वैश्विक कार्बन संतुलन (Carbon budget) पर नकारात्मक असर पड़ रहा है।
 - गौरतलब है कि पर्माफ्रॉस्ट में वायुमंडल की तुलना में तीन गुना अधिक कार्बन जमा है।



गंभीर वायु प्रदूषण के कारण CAQM ने NCR में ग्रेडेड रिसॉन्स एक्शन प्लान (GRAP) का चरण-III लागू किया

इसमें उत्सर्जन और भीड़भाड़ को कम करने के लिए 9-सूचीय कार्य योजना शामिल होगी। इस योजना में निम्नलिखित उपाय शामिल होंगे-

- निर्माण, खनन एवं प्रदूषणकारी वाहनों पर प्रतिबंध;
- हाइब्रिड स्कूलिंग (यानी कभी घर से तो कभी स्कूल जाकर पढ़ाई करना) और कार्यालयों के समय को चरणबद्ध तरीके से लागू करना आदि।
- वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) एक वैधानिक निकाय है। इसे दिल्ली-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) और आस-पास के क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता के प्रबंधन के लिए स्थापित किया गया है। इसे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और निकटवर्ती क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग अधिनियम, 2021 के तहत स्थापित किया गया है।

ग्रेडेड रिसॉन्स एक्शन प्लान (GRAP) के बारे में

- यह दिल्ली-NCR के वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) के औसत स्तर पर आधारित एक आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रणाली है। इसका उद्देश्य दिल्ली-NCR में खराब होती वायु गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए विभिन्न हितधारकों के बीच समन्वय स्थापित करना है।
- इसे AQI स्तरों के आधार पर निम्नलिखित चार चरणों में विभाजित किया गया है-
 - चरण 1 (स्टेज 1): खराब श्रेणी (AQI 201 से 300);
 - चरण 2 (स्टेज 2): बहुत खराब श्रेणी (AQI 301 से 400);
 - चरण 3 (स्टेज 3): गंभीर श्रेणी (AQI 401 से 450); तथा
 - चरण 4 (स्टेज 4): अति गंभीर श्रेणी (AQI 451 से अधिक)।

दिल्ली-NCR में वायु प्रदूषण के लिए जिम्मेदार कारक

- स्थलाकृतिक कारक (Topographical Factors): इसमें सिंधु-गंगा मैदान के बेसिन का प्रभाव; प्राकृतिक बाधाएं (हिमालय और अरावली) आदि शामिल हैं।
- मौसम संबंधी कारक (Meteorological Factors): इसमें तापमान व्युत्क्रम (Temperature Inversion); पवनों की कम गति आदि शामिल हैं।
- प्रदूषण: इसमें पराली जलाना; वाहनों और औद्योगिक उत्सर्जन से होने वाला प्रदूषण आदि शामिल है।

केस स्टडी: बीजिंग ने अपना वायु प्रदूषण कैसे कम किया?

- वायु गुणवत्ता में सुधार: बीजिंग का औसत AQI 2015 में 144 था, जो 2024 में घटकर 92 हो गया।
- चरणबद्ध व दीर्घकालिक रणनीति: स्थानीय शासन, जनभागीदारी और स्थिर विनियमन के संयोजन से एक तीन-चरणीय प्रदूषण-रोधी योजना (1998-2017) लागू की गई थी।
- लक्षित स्रोत नियंत्रण: स्वच्छ ऊर्जा, वाहन उन्नयन और सख्त औद्योगिक नियमों के माध्यम से कोयला ताप विद्युत संयंत्रों, परिवहन और उद्योग/निर्माण से उत्सर्जन में कटौती का लक्ष्य निर्धारित किया गया था।
- क्षेत्रीय सहयोग और निवेश: बीजिंग के आसपास के 5 प्रांतों के साथ समन्वित क्षेत्रीय सहयोग स्थापित किया गया था और महत्वपूर्ण सार्वजनिक निवेश जुटाया गया था। इन कदमों से प्रदूषकों में तेजी से कमी आई थी।



'ग्लोबल कूलिंग वॉच 2025' रिपोर्ट में संधारणीय शीतलन तकनीकों को अपनाने की सिफारिश की गई है

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) के 'कूल कोएलिशन' ने 'ग्लोबल कूलिंग वॉच 2025' रिपोर्ट प्रकाशित की है। इस रिपोर्ट में उन संधारणीय शीतलन समाधानों (Sustainable Cooling Pathway) का उल्लेख किया गया है जो 2050 तक शीतलन से होने वाले अनुमानित ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में नाटकीय रूप से कमी ला सकते हैं।

रिपोर्ट में रेखांकित मुख्य चिंताएं

- शीतलन तकनीकों की मांग में वृद्धि: यदि मौजूदा शीतलन तकनीकों के उपयोग और उनकी मांग में वृद्धि जारी रहती है तो वैश्विक शीतलन उपकरणों की क्षमता 2022 की 22 टेरावॉट (TW) से बढ़कर 2050 तक 68 TW हो जाएगी। यह तीन गुना वृद्धि है।
- नीतियों में कमियां: विश्व के केवल 54 देश ही संधारणीय शीतलन समाधान को पूरी तरह अपनाए हुए हैं। वैसे कई देशों की नीतियों में इनका उल्लेख तो है, लेकिन इस दिशा में कार्यान्वयन नहीं हो पा रहा है।
- बढ़ती भीषण गर्मी: जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (IPCC) के अनुसार, आज विश्व की 30% आबादी घातक उष्मीय तनाव (Heat Stress) का सामना कर रही है। यह अनुपात सदी के अंत तक बढ़कर 48% से 76% तक हो सकता है।

यह समस्या शहरी ऊष्मा द्वीप प्रभाव और लू (हीटवेव्स) की वजह से और अधिक गंभीर हो जाएगी।

प्रस्तावित संधारणीय शीतलन समाधान

- परंपरागत शीतलन तकनीक: मकानों के डिजाइन, शहरी नियोजन और रेफ्रिजरेटेड कैबिनेट्स पर दरवाजे जैसे आसान परंपरागत उपायों का सहारा लिया जा सकता है। इससे आधुनिक शीतलन तकनीकों पर भार कम होगा। इससे लागत और उत्सर्जन, दोनों में कमी आएगी।
- कम ऊर्जा खपत वाली शीतलन तकनीकों का उपयोग: एयर कंडीशनिंग की बजाय या उसके साथ पंखे और वाष्पशील कूलर जैसी कम ऊर्जा खपत वाली प्रणालियों को प्राथमिकता देनी चाहिए। इससे ऊर्जा उपयोग और लागत में कटौती की जा सकती है।
- सर्वोत्तम ऊर्जा दक्षता वाली तकनीकों को अपनाना: परिवर्तनीय-गति वाले कंप्रेसर और उच्च दक्षता वाली प्रणालियां अपनानी चाहिए और इनका नियमित रूप से रखरखाव भी करना चाहिए। इससे ये प्रणालियां अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन देंगी।
- हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (HFC) का चरणबद्ध रूप से उपयोग समाप्त करना: कम वैश्विक तापवृद्धि क्षमता (GWP) वाले ऐसे रेफ्रिजरेट उपयोग करना चाहिए जिसकी दक्षता हमेशा बनी रहे। इससे प्रत्यक्ष उत्सर्जन कम होगा और संधारणीय शीतलन को बढ़ावा मिलेगा।

'बीट द हीट' वैश्विक पहल के बारे में

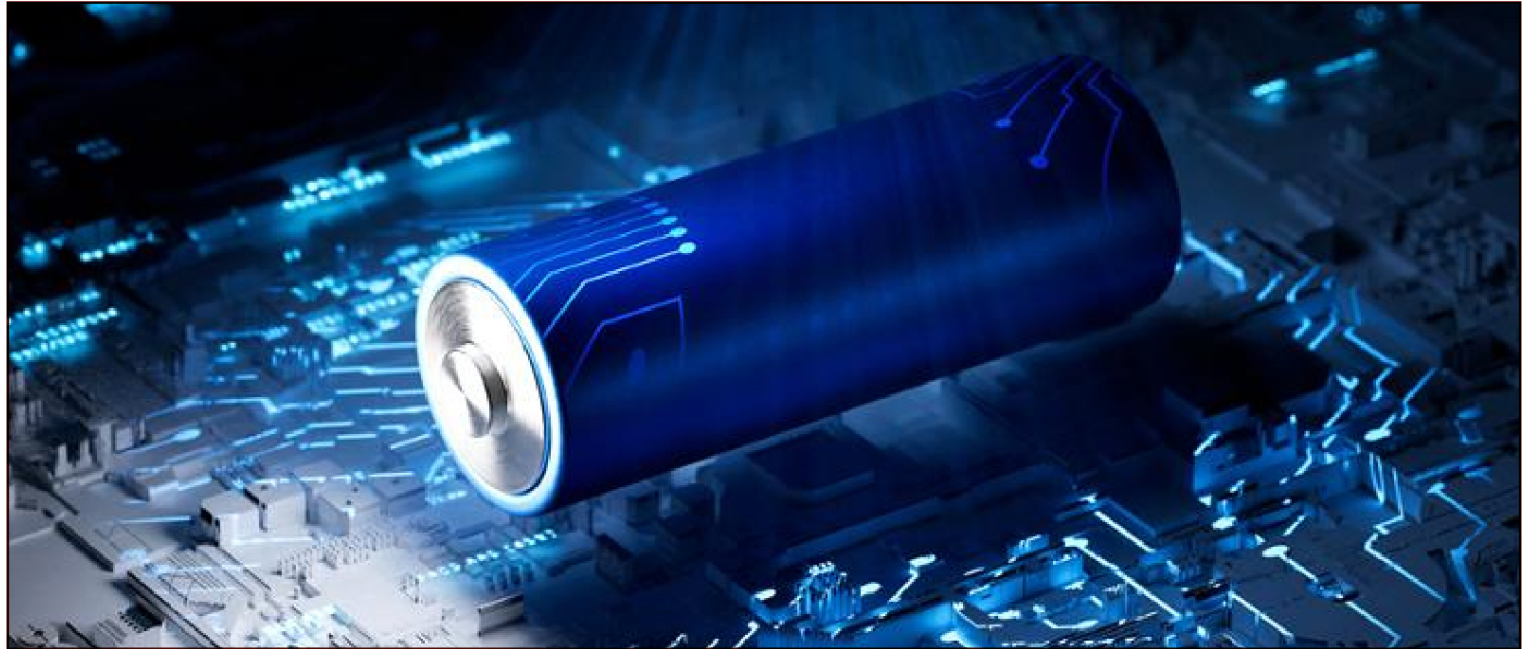
- यह UNEP की 'कूल कोएलिशन' और COP30 के अध्यक्ष ब्राजील की संयुक्त पहल है। इसका उद्देश्य 'ग्लोबल कूलिंग वॉच' रिपोर्ट के निष्कर्षों को वास्तविक जलवायु कार्रवाई में बदलना है।
- उद्देश्य: यह पहल सरकारों, शहरों, उद्योगों और वित्तीय संस्थानों को शामिल करते हुए सभी के लिए समान रूप से शीतलन तकनीकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए बहुस्तरीय शासन को बढ़ावा देती है।
- मुख्य बल:
 - परंपरागत (Passive) और प्रकृति-आधारित शीतलन पद्धति के उपयोग को प्राथमिकता देना।
 - ऊर्जा-दक्ष और 'कम वैश्विक तापवृद्धि क्षमता (GWP)' वाली तकनीकों की सार्वजनिक खरीद को प्रोत्साहन देना।
 - शहरी तापवृद्धि से निपटने की योजना बनाना और सुभेद्य समुदायों के लिए समावेशी शीतलन समाधान विकसित करना।

NTPC-NETRA में भारत की सबसे बड़ी और पहली MWh-पैमाने की वैनेडियम रेडॉक्स फ्लो बैटरी (VRFB) प्रणाली का उद्घाटन किया गया

सॉलिड-स्टेट बैटरियों के साथ-साथ फ्लो बैटरियां भी अगली पीढ़ी की बैटरी प्रौद्योगिकियों में से एक होती हैं। ये ग्रिड पैमाने के उपयोगों के लिए लिथियम-आयन के एक विकल्प के रूप में उभर रही हैं। ये बैटरियां लचीलापन, लंबी उपयोग अवधि, और सुरक्षा प्रदान करती हैं।

अगली पीढ़ी की बैटरी प्रौद्योगिकियों के बारे में

- ▶ **फ्लो बैटरियां:** ये अपचयन-ऑक्सीकरण (reduction-oxidation या redox) अभिक्रियाओं द्वारा संचालित होती हैं। इनमें दो अलग-अलग तरल इलेक्ट्रोलाइट्स होते हैं। ये इलेक्ट्रोलाइट्स एक छिद्रित झिल्ली (porous membrane) के माध्यम से आयनों या प्रोटॉन्स को आगे-पीछे प्रवाहित करते हैं।
 - ⊕ ये बैटरियां बड़ी मात्रा में ऊर्जा संग्रहित कर सकती हैं। यह इलेक्ट्रोलाइट सेल्स के आकार पर निर्भर करता है। साथ ही, इनमें किसी ज्वलनशील या प्रदूषक सामग्री का उपयोग भी नहीं किया जाता है।
 - ⊕ फ्लो बैटरियों के प्रकार: वैनेडियम रेडॉक्स, जिंक-ब्रोमीन, आयरन-सॉल्ट/ऑर्गेनिक सिस्टम।
 - ▶ **सॉलिड-स्टेट बैटरियां:** इनमें ठोस इलेक्ट्रोलाइट समाधानों का उपयोग होता है। ये इलेक्ट्रोलाइट्स विभाजक के रूप में भी कार्य करते हैं। इससे एक अलग विभाजक की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।
 - ⊕ इससे ये बैटरियां सुरक्षित बन जाती हैं। ऐसा इस कारण, क्योंकि क्षति के दौरान इनमें रिसाव (leakage) कम होता है तथा अधिक तापमान हो जाने पर ये बैटरियां फूलती नहीं हैं।
- अगली पीढ़ी की बैटरी प्रौद्योगिकियों का महत्त्व
- ▶ ये बैटरियां ग्रिड-पैमाने पर ऊर्जा भंडारण के लिए उपयुक्त होती हैं। ऐसा इस कारण, क्योंकि बैटरी द्वारा विद्युत प्रदान करने की क्षमता और उसकी कुल ऊर्जा भंडारण क्षमता एक दूसरे से अलग होती है। इससे उपयोग के आधार पर दोनों तरह की क्षमताओं को घटाया-बढ़ाया जा सकता है।
 - ▶ यह लिथियम-आयन बैटरियों का एक विकल्प प्रदान करती है, क्योंकि ये सामग्री पर निर्भरता में विविधता लाती हैं यानी भिन्न-भिन्न सामग्रियों का उपयोग किया जा सकता है और आपूर्ति श्रृंखला सुरक्षा को बढ़ाती हैं।
 - ▶ इनका उपयोग विद्युत प्रबंधन, पंपों, ग्रिड ऊर्जा भंडारण आदि में किया जाता है।
 - ▶ ये लंबी अवधि के लिए ऊर्जा भंडारण (LDES) समाधान प्रदान करती हैं। ये समाधान नवीकरणीय ऊर्जा के समेकन और ग्रिड अनुकूलनशीलता को बढ़ाते हैं।



अन्य सुर्खियां



डिजिटल गोल्ड

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (SEBI/ सेबी) ने डिजिटल गोल्ड को लेकर एक सार्वजनिक सलाह जारी की है। इसके माध्यम से सेबी ने निवेशकों को विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों के माध्यम से पेश किए जा रहे 'डिजिटल गोल्ड' या 'ई-गोल्ड' उत्पादों में निवेश न करने की चेतावनी दी है। सेबी ने स्पष्ट किया है कि ऐसे उत्पाद सेबी के विनियामक ढांचे के अंतर्गत नहीं आते हैं।

डिजिटल गोल्ड के बारे में

- ▶ डिजिटल गोल्ड का तात्पर्य स्वर्ण को भौतिक रूप से अपने पास रखे बिना उसकी खरीद से है।
- ▶ डिजिटल गोल्ड का मूल्य भौतिक स्वर्ण के मूल्य से जुड़ा होता है।
- ▶ डिजिटल गोल्ड ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग करके बनाया जाता है। यह निवेशकों को इलेक्ट्रॉनिक यानी डिजिटल रूप से स्वर्ण खरीदने, बेचने और संग्रहीत करने की अनुमति देता है।
- ▶ ये उत्पाद न तो प्रतिभूतियों (securities) के रूप में अधिसूचित हैं और न ही कमोडिटी डेरिवेटिव्स के रूप में विनियमित हैं।



जलवायु जोखिम सूचकांक, 2026

जर्मनवॉच ने जलवायु जोखिम सूचकांक (Climate Risk Index: CRI) 2026 जारी किया।

- ▶ यह सूचकांक चरम मौसमी घटनाओं से होने वाले मानवीय और आर्थिक नुकसान के आधार पर देशों को रैंक प्रदान करता है। इससे जलवायु के प्रति मजबूत अनुकूलनशीलता की तत्काल आवश्यकता प्रकट होती है।
- ▶ जलवायु जोखिम सूचकांक (CRI) के बारे में
 - ▶ उत्पत्ति: इसे 2006 में एक वार्षिक वैश्विक जलवायु प्रभाव सूचकांक के रूप में प्रस्तुत किया गया था।
 - ▶ 2026 सूचकांक के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर:
 - ⊕ वर्ष 1995 और 2024 के बीच, 9,700 चरम मौसमी घटनाएं हुई हैं। इन घटनाओं के कारण 8 लाख से अधिक मौतें हुई हैं और 4.5 ट्रिलियन डॉलर का नुकसान हुआ है।
 - ⊕ भारत CRI रैंक 2024 में 15वें स्थान पर और CRI रैंक 1995-2024 में 9वें स्थान पर रहा।
 - ⊕ भारत ने तीन दशकों में लगभग 430 चरम मौसमी घटनाओं का सामना किया है। इनसे 170 बिलियन डॉलर का नुकसान हुआ है और 1.3 बिलियन लोग प्रभावित हुए हैं।



टीबी (TB) के लिए टीकों का विकास

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की एक रिपोर्ट में टीबी को लेकर व्यापक वित्त-पोषण और समान पहुंच रणनीतियों का आह्वान किया गया है। इससे यह सुनिश्चित किया जा सकेगा कि टीबी के नवीन टीके टीबी के अधिक मामलों वाले देशों में किशोरों और वयस्कों तक पहुंचें।

- उल्लेखनीय है कि टीबी के विनाशकारी वैश्विक प्रभाव के बावजूद, एक सदी से अधिक समय से किसी नए टीके को लाइसेंस प्राप्त नहीं हुआ है।
- वर्तमान में, उपलब्ध बैसिली कैलमेट-ग्युरिन (BCG) टीका शिशुओं और छोटे बच्चों को टीबी से सुरक्षा प्रदान करता है, लेकिन यह किशोरावस्था एवं वयस्क अवस्था में फुफ्फुसीय टीबी (pulmonary TB) के खिलाफ केवल सीमित व परिवर्तनीय सुरक्षा ही प्रदान करता है।
- WHO ने 2023 में टीबी वैक्सीन एक्सीलरेटर काउंसिल की स्थापना की थी। इसे नए टीबी टीकों के विकास, परीक्षण, बाजार में उतारने (authorization) और उपयोग को सुविधाजनक बनाने के लिए स्थापित किया गया है।

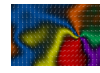


VINBAX अभ्यास

छठा वियतनाम-भारत सैन्य अभ्यास VINBAX हनोई में शुरू हुआ।

VINBAX अभ्यास के बारे में

- यह भारत और वियतनाम के बीच एक द्विपक्षीय सैन्य अभ्यास है। इसका उद्देश्य अंतर-संचालन क्षमता को बढ़ाना और संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना अभियानों में सर्वोत्तम प्रदर्शितियों को साझा करना है।



अल्टरमैग्नेटिज्म (Altermagnetism)

अल्टरमैग्नेटिज्म चुंबकीय क्रम के एक नए वर्ग के रूप में उभरा है। इसमें फेरोमैग्नेटिज्म (Ferromagnetism) और एंटीफेरोमैग्नेटिज्म (Antiferromagnetism) दोनों के गुण मौजूद हैं।

- फेरोमैग्नेट जैसे- फ्रिज मैग्नेट: इसमें सभी सूक्ष्म परमाणु चुंबक एक ही दिशा में व्यवस्थित होते हैं। इससे एक मजबूत, बाहरी चुंबकीय क्षेत्र बनता है।
- एंटीफेरोमैग्नेट: इसमें परमाणुओं की चुंबकीय दिशाएं वैकल्पिक दिशाओं में व्यवस्थित होती हैं। इससे वे एक दूसरे को रद्द कर देती हैं और कोई शुद्ध चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न नहीं होता है।
- अल्टरमैग्नेटिज्म में एंटीफेरोमैग्नेट की तरह, कोई शुद्ध चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न नहीं होता है, लेकिन इसकी आंतरिक इलेक्ट्रॉनिक संरचना फेरोमैग्नेट की तरह होती है, जिससे मजबूत स्पिन ध्रुवीकरण (spin polarization) बनता है।



बुकर पुरस्कार

डेविड ज़ाले (David Szalay) को उनके उपन्यास "फ्लेश (Flesh)" के लिए 2025 के बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

- यह फिक्शन श्रेणी में उनकी छठी कृति है। साथ ही, वे यह पुरस्कार जीतने वाले पहले हंगेरियन-ब्रिटिश लेखक बन गए हैं।

बुकर पुरस्कार के बारे में

- उत्पत्ति: इसे 1969 में यूनाइटेड किंगडम में स्थापित किया गया था।
- पात्रता: यह पुरस्कार किसी भी देश के नागरिक द्वारा अंग्रेजी भाषा में लिखे गए तथा ब्रिटेन और आयरलैंड में प्रकाशित साहित्यिक रचना के लिए दिया जाता है।
- पुरस्कार: विजेता को £50,000 मिलते हैं और शॉर्टलिस्ट किए गए प्रत्येक लेखक को £2,500 मिलते हैं।

नोट: अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार बुकर पुरस्कार से अलग है। अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार उन सर्वश्रेष्ठ लंबी फिक्शन या लघु कहानियों के संग्रह का सम्मान करता है, जिनका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया हो तथा वे यूनाइटेड किंगडम और/या आयरलैंड में प्रकाशित हुए हों।



सुर्खियों में रहे स्थल



इथियोपिया (राजधानी: अदीस अबाबा)

2027 का UNFCCC COP-32 इथियोपिया के अदीस अबाबा में आयोजित किया जाएगा।

भौगोलिक अवस्थिति

- अवस्थिति: हॉर्न ऑफ अफ्रीका में एक स्थलरुद्ध देश है। 1993 में इरिट्रिया के इससे अलग होने के बाद इसकी समुद्र के साथ सीमा समाप्त हो गई थी।
- यह पूरी तरह से उष्णकटिबंधीय अक्षांशों के भीतर स्थित है।
- स्थलीय सीमाएं: यह उत्तर में इरिट्रिया, पूर्वोत्तर में जिबूती, पूर्व में सोमालिया, दक्षिण में केन्या तथा पश्चिम में दक्षिण सूडान और सूडान से घिरा हुआ है।

भौगोलिक विशेषताएं

- नदियां: ब्लू नील, तेकेज़, बारो, शेबेले, जेनेल, अवाश, ओमो आदि।
- भू-आकृति विज्ञान: भ्रंश घाटी, पूर्वी अफ्रीकी भ्रंश प्रणाली का हिस्सा आदि।
- डेनाकिल मैदान में कोबर सिक समुद्र तल से 380 फीट (116 मीटर) नीचे है।
- उच्चतम बिंदु: माउंट रास डेजेन।



अहमदाबाद



भोपाल



चंडीगढ़



दिल्ली



जयपुर



जोधपुर



गुवाहाटी



हैदराबाद



लखनऊ



प्रयागराज



पुणे



रांची



सीकर